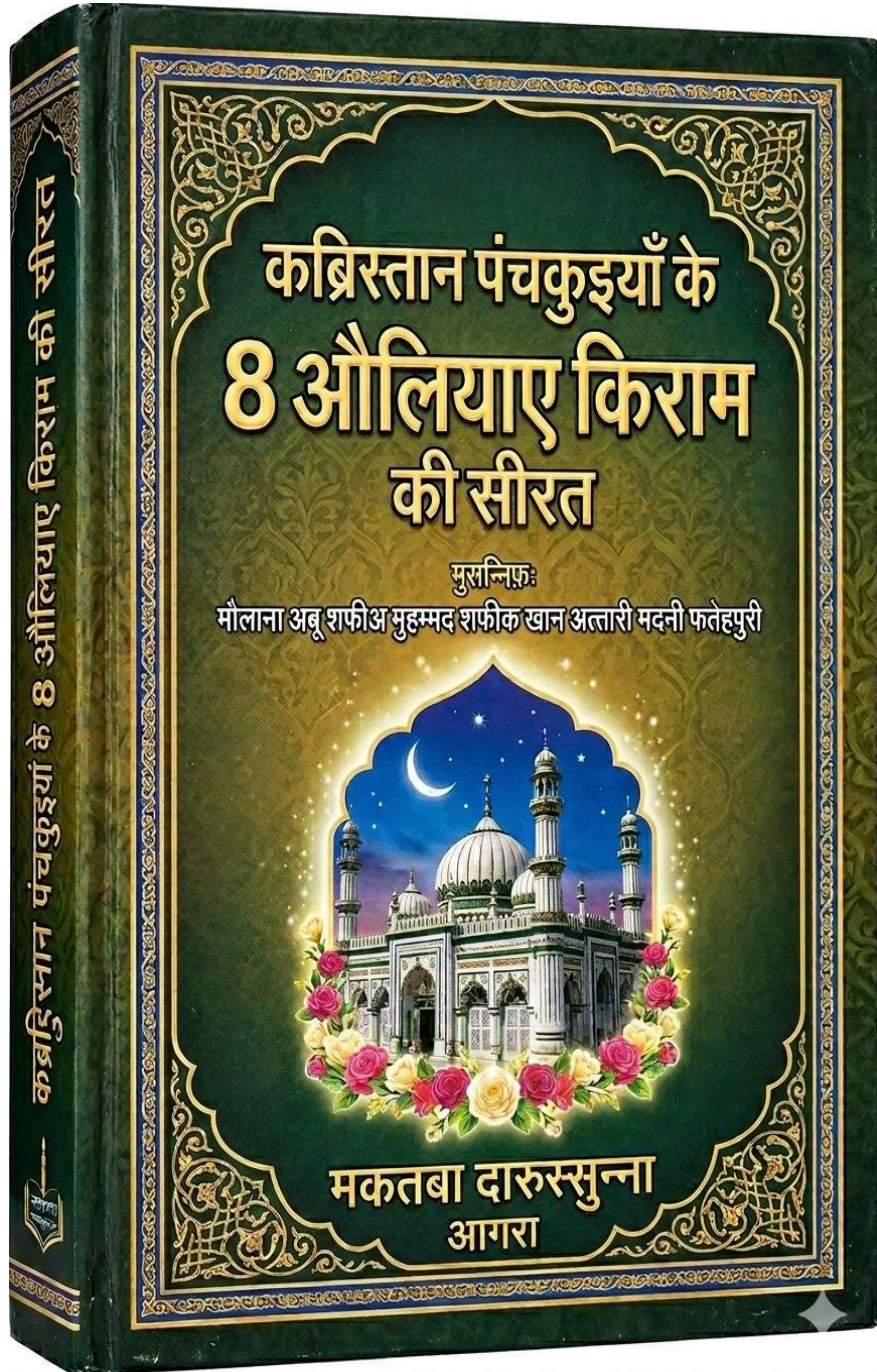
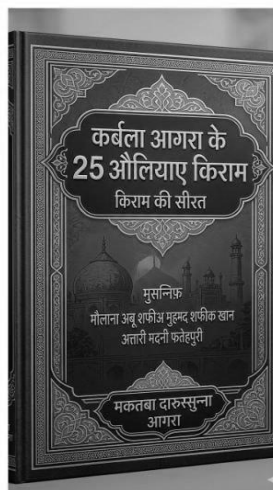
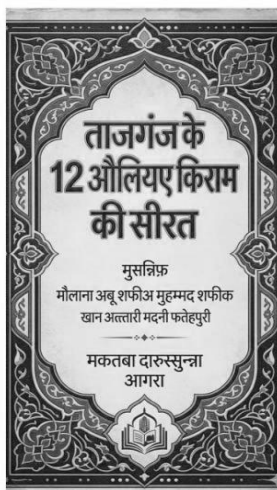
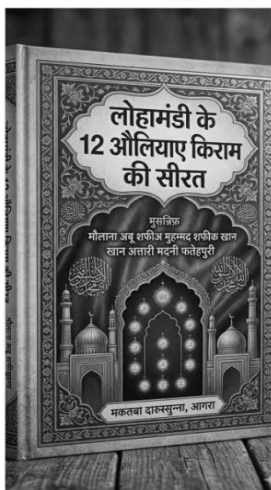
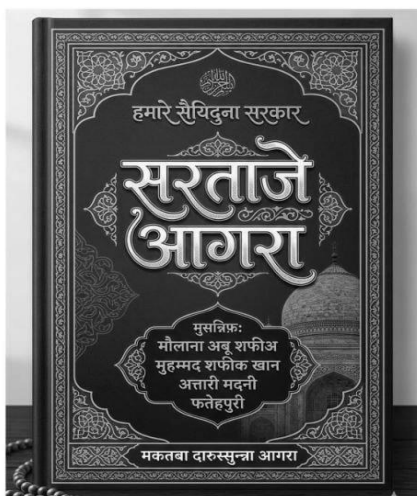
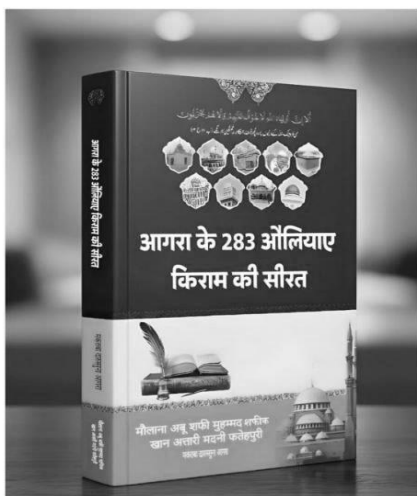




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत **मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही** से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ़ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ़ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ़ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारका की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है ।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो ।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن آراء و فتاویٰ مجلس مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो ।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के जिक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर खुसरू रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ खुसरू! मशाइख़ के मलफ़ूजात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका जिक्र किया करो, कि उनके जिक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का जिक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्गानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे खाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْزَنْ أَلِ الَّذِينَ قَتَلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, آل عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिशत अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्रअत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारंगी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्हमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्जुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्शीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्जुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्जुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक्काबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुजुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

📖 **सदकए जारिया का बेहतरीन मौका** 📖

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत **700 रुपये** रिआयती कीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

कब्रिस्तान पंचकुइयां (आगरा) के 8 औलियाए किराम की प्यारी सीरत

कब्रिस्तान पंचकुइयां

(1) मौलाना मुहम्मद सिराजुल इस्लाम

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली वतन मौज़ा रसूलाबाद परगना ताल ग्राम ज़िला फर्रुखाबाद था, आप रहमतुल्लाह अलैह एक शरीफ़ और मुअज़्ज़ज़ ख़ानदान के फ़र्द थे जिसमें सदियों से इल्म व फ़ज़ल का चर्चा और ओहदा क़ज़ा का सिलसिला चला आता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के भाई मौलाना मुहम्मद क़मरुल इस्लाम सदर दीवानी आगरा (हाइकोर्ट) के सरिश्ता अपील दोम में अहलकार और ऐसे बा बरकत और मुतदय्यिन यानी दियानत दार बुजुर्ग थे कि हुक्कामे ज़िला ने इन को शाही जामा मस्जिद आगरा का मुतावल्ली मुक़र्रर कर दिया था।

जब ग़दर यानी 1857 ईस्वी की जंगे आज़ादी में जामा मस्जिद को मुअत्तल कर के मुक़फ़्फ़ल कर दी गई यानी ताला लगा दिया गया तो इस पर आशोब ज़माने में इसी बा हिम्मत बुजुर्ग ने कमरे हिम्मत बाँधी और 25 अगस्त 1857 ईस्वी से मस्जिद को खुलवाने की कोशिश शुरू की और सात आठ बरस की मुसलसल कोशिश और लगातार मेहनत से मई 1864 ईस्वी में मस्जिद को खुलवा लिया।

जब तक सदर दीवानी का दफ़्तर आगरा में रहा वो जामा मस्जिद के मुतवल्ली और इमाम रहे, इनके इलाहाबाद तशरीफ़ ले जाने पर मस्जिद की तौलियत मौजूदा कमेटी अहले इस्लाम के सिपुर्द की गई।

मौलाना कमरुल इस्लाम ने ब मुकाम इलाहाबाद इंतिकाल फ़रमाया और वहीं दफ़न हुए।

मौलाना मुहम्मद सिराजुल इस्लाम रहमतुल्लाह अलैह अपने भाई के साथ आगरा तशरीफ़ लाए और उनके इलाहाबाद जाने पर जामा मस्जिद के इमाम मुक़र्रर किए गए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़ाहिरी और बातिनी दोनों तरह के उलूम हासिल किये थे, क़ादरिया और नक़्शबंदिया सिल्सिला में मुंसलिक और हज़रत सुब्हान शाह पीली भीति रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व खलीफ़ा थे।

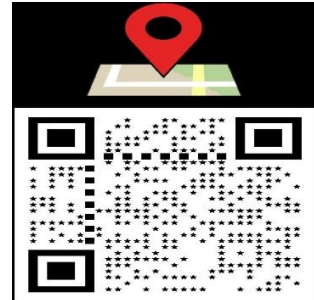
राक़िमे बोस्ताने अख्यार को आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हुआ था, खुल्बा और कुरआने मजीद निहायत खुश इल्हानी और इस क़द्र बुलंद आवाज़ से पढ़ते थे कि तमाम मस्जिद गूँज उठती थी।

28 रजब 1316 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिकाल फ़रमाया और क़ब्रिस्तान पंच कुईयां में आसूदा हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मौजूद है।

मौलाना ज़ियाउल इस्लाम साहिब आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिब ज़ादे आप रहमतुल्लाह अलैह के जानशीन, जामा मस्जिद आगरा के इमाम और मदरसा आलिया जामा मस्जिद के नाज़िम हैं। आप पुराने बुज़ुर्गों का नमूना हैं, क़ुदरत ने आप में बहुत सी फ़ज़ीलतें जमा कर दी हैं।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 256)

कब्रिस्तान पंचकुइयां में मौजूद मौलाना सिराजुल इस्लाम के मज़ार के Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(2) शैख अबुल फ़त्ताह

राकिमुल हुरूफ़ (सईद अहमद मरहरवी) आप रहमतुल्लाह अलैह के तारीखी वाकिआत पेश करने से माज़ूर है। बहुत सी किताबों की वर्क गरदानी की मगर गौहरे मक्सूद हाथ ना आया, आप रहमतुल्लाह अलैह की खिरक्रे आदात और कमालात की अक्सर ज़बानी रिवायतें मशहूर हैं, जिनमें एक येह भी है कि छः सात मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह ने नौजवानी के दिनों में पैदल हज अदा फ़रमाए थे।

मज़ार मुबारक आगरा के वसीअ शहरे खमोशाँ कब्रिस्तान पच कुईयां में जियारत गाह खास व आम और हजारहा लोगों को गिरवीदा किए हुए है। तावीज़ व लौहे मज़ार खूबसूरत व मुनक्कश और चबूतरा निहायत पुर फ़जा है जिसके अतराफ़ में हाफ़िज़ अब्दुल करीम साहिब मरहूम का पक्का मक़बरा हाल ही में तामीर हुआ है, तावीज़ के सीने पर कलिमए तय्यिबा, अतराफ़ में आयतुल कुर्सी और लौहे मज़ार पर येह तारीख़ लिखी हुई है:

ब तारीख़ याज़दहुम शव्वाल सन नह सद व हफ़ताद व हशत 978

हिजरी मरहूमी, मग़फ़ूरी अबुल फ़त्ताह इब्ने बारी सुल्तान दर

आगाज़े जवानी अज़ीं आलमे फ़ानी ब रहमते हक़ पैवस्त।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 33.34)

(3) शैख अबुल फ़तह शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शोहदा के जुमरे में हैं ख्वाबगाह खाकी यानी **मज़ार मुबारक** कब्रिस्तान पच कुईयां के गोशए जुनूबी मशरिक़ में एक खेत के दर्मियान में वाक़ेअ है, एक पक्के चबूतरे पर पाँच क़ब्रें बनी हैं, उनमें जुनूबी आख़िरी क़ब्र आप रहमतुल्लाह अलैह की है। लौहे मज़ार का

पत्थर निहायत पाएदार व खुशनुमा है जिस पर आयाते कुरआनी के नीचे येह तारीख लिखी हुई है:

हज़ार अफ़सोस अज़ मर्ग अबुल फ़तह
कि दानिश यक जहाँ दुर्दम फज़ूदा
ब बागे अदन अज़ दस्ते शहादत
देरे रहमत ब रुए खुद कशीदा
चू चश्मश ख़िफ़त तारीख़ वफ़ातश
ब गुफ़ता हा तफ़म मज़लूम बूदा

आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात 15 मुहर्रम, जुमेरात के दिन 1033 हिजरी को हुई। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 34.35)

(4) हाफ़िज़ अहमद हुसैन नक्रशबंदी मुजद्दिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ मुहम्मद बख़्श अकबराबादी सौदागर पंजाबी के फ़र्ज़दे सईद यानी बेटे हैं। बचपन ही से खुदा तलबी की चिंगारी आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल में सुलग रही थी, अक्सर रातों को जंगल में फिरते थे। और बुजुर्गाने अकबराबाद के मज़ारात पर निहायत ज़ौक्रो शौक्र से हाज़िर हुआ करते थे, तमीज़ की उम्र को पहुंच कर आप रहमतुल्लाह अलैह अक्सर मज़ारात पर चिल्ला कश हो कर कमालात से माला माल हुए और हाफ़िज़ वज़ीर अली अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दर्स से जो कि एक साहिबे बातिन और मज़ज़ूब सिफ़त बुजुर्ग थे कुरआन शरीफ़ के नूर से अपने सीने को मुनव्वर किया। शुरू ही से हाल में बेखुद थे, आख़िरे कार इनायते इलाही ने आप रहमतुल्लाह अलैह को मौलवी हाजी सैय्यिद मुहम्मद कुर्बान अली बुख़ारी जयपुरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमते बा बरकत में

पहुंचा दिया और पीर रौशन ज़मीर की नज़रे तवज्जोह से चंद साल ही के अंदर मंज़िले मक़सूद पर पहुंच कर खिरकए ख़िलाफ़त से मुशरफ़ हुए।

हाजी सैय्यिद मुहम्मद कुर्बान अली बुख़ारी जयपुरी रहमतुल्लाह अलैह के विसाल के बाद जब उन के साहिबज़ादे सैय्यिद अब्दुर्रहमान साहिब रहमतुल्लाह अलैह ने तबर्क़ात तक्रसीम किए तो सब से पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही को खिरक़ा मर्हमत फ़रमाया और तबर्क़ात तक्रसीम करने के बाद हलक़ा से फ़ारिग़ हो कर इरशाद फ़रमाया कि: तमाम भाईयों को जान लेना चाहिए कि हाफ़िज़ अहमद हुसैन को ख़ुलफ़ाए आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह क़िब्ला में ख़ास दर्जा हासिल है।

आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत मुन्कसिरुल मिज़ाज, सलीमुत्तबा, बा अख़लाक़ और गुमनामी पसंद बुजुर्ग़ हैं, शरीअत पर बड़े साबित क़दम और अक्सर ख़ामोश रहते थे, मुरीदों पर आप रहमतुल्लाह अलैह का निहायत नेक असर है, कैसा ही बदकार क्यों ना हो, आप रहमतुल्लाह अलैह की गुलामी में आकर ताइब और नेको कार हो जाता है।

पहले आप रहमतुल्लाह अलैह सख़्ती के साथ किसी बुराई से मना नहीं फ़रमाते थे बल्कि साफ़ फ़रमा देते हैं कि जो चाहो करो और जहां चाहो जाओ मगर हमें ज़रूर साथ ले लिया करो।

राक़िम बोस्तान से बयान किया गया है कि अगर मुरीद कलाल ख़ाना या रंडी के मकान पर भी जाना चाहे तो आप रहमतुल्लाह अलैह को उस के साथ जाने में कुछ दरेग़ नहीं होता और आप रहमतुल्लाह अलैह बे तकल्लुफ़ उस के साथ चले जाते हैं मगर चंद ही दिन में मुरीद पर ऐसा नेक असर पड़ता है कि कुछ से कुछ हो जाता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मामूल था कि नमाज़ सुब्ह अपने मुहल्ला की मस्जिद में बा जमाअत अदा फ़रमा कर आठ बजे तक औरादो

वज़ाइफ़ से फ़ारिग होते थे, फिर खाना खाकर जंगल को तशरीफ़ ले जाते थे, वहां मज़ारात पर मुराक़बा में मसरूफ़ रहते थे वहां से डेढ़ दो बजे बराहे रास्त अकबरी मस्जिद में आकर ज़ुहर की नमाज़ जमाअत से पढ़ते हैं फिर अस्त्र तक अकबरी मस्जिद में औरादो वज़ाइफ़ में मशगूल रह कर अस्त्र की नमाज़ जमाअत से अदा फ़रमाते, अस्त्र की नमाज़ पढ़ने के बाद अक्सर अपने साहिबज़ादे मुहम्मद हसन साहिब या भाई हाजी अल्लाफ़ हुसैन साहिब सौदागर की दुकान पर क्रियाम फ़रमाते थे, फिर मगरिब की नमाज़ अकबरी मस्जिद में पढ़ कर मकान पर तशरीफ़ ले जाते थे। फिर इशा की नमाज़ के वास्ते अकबरी मस्जिद में तशरीफ़ लाते थे।

अल्लाह पाक मुदत तक आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ जारी रखे। अफ़सोस कि किताब की तर्तीब के बाद हाफ़िज़ अहमद हुसैन रहमतुल्लाह अलैह ने बतारीख 3 शव्वाल 1331 हिजरी जुमा के दिन सफ़रे आख़िरत इख़्तियार फ़रमाया और क़ब्रिस्तान पच कुईयां में सिपुर्दे खाक किए गए यानी वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है। लौहे मज़ार पर दो तारीखें लिखी हुई हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 41.43)

(5) शैख़ मुहम्मद आरिफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह आरिफ़े ख़ुदा और तालिबाने हिदायत के रहनुमा और असरारे तरीक़त के मुशिकल कुशा थे, आलमगीर बादशाह के ज़माने में यानी 1080 हिजरी बमुताबिक़ 1669 ईस्वी में वासिल ब हक हुए यानी वफ़ात फरमा गये, **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान पच कुईयां के मशरिकी हिस्से में जो पक्की सड़क के मुत्तसिल है वाक़ेअ है जिसके तावीज़ पर येह तारीख़ ख़त्ते नस्तालीक़ से लिखी हुई है।

चूँ मुहम्मद आरिफ़े गुफ़रां पनाह
जामए तन दर रहे हक़ बूद शक़

साले तारीखश शुनीदम अज खिरद
आरिफे हक नेक वासिल शुद ब हक

(बोस्ताने अख्यार, पेज 198)

(6) मिर्जा अली शाह मज्जूब

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह मवाशी, साहिबे विलायत इलाहाबाद के मंजूरे नज़र और तेरहवीं सदी के एक साहिबे कमाल और शमशीरे बरहना मज्जूब थे, हकीम नूरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के दीवानखाना और उस के कुरबो जवार में जो कि तमाम मज्जूबाने आगरा का दारुल करार चला आता है अक्सर आमदो रफ्त रखा करते थे, मकान मुहल्ला डयोढ़ी बेगम माईथान में था।

आप रहमतुल्लाह अलैह की बात तकदीरे इलाही का नुस्खा और आप रहमतुल्लाह अलैह की मंशा मशीय्यते इलाही का नविश्ता होता था। ज्यादा तर बुरी बातें आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान से निकला करती थीं जिन का ज़हूर फ़ौरन होता था, एक मर्तबा एक मज्जूब जुल करनैन नामी दीवानखाना में ठहरा हुआ था, उस का एक मन्का इत्तिफ़ाक़ से गुम हो गया, लोगों ने आप रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ इशारा कर दिया, फिर क्या था, दोनों मज्जूबों में जंग छिड़ गई, वो मन्का आप रहमतुल्लाह अलैह से मांगता था, आप रहमतुल्लाह अलैह इन्कार करते थे कि मैंने नहीं लिया, जब वो किसी तरह ना माना तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने गुस्सा में आ कर उस का प्याला उठा कर तोड़ दिया, प्याला का टूटना जुल करनैन की सिकंदरी का ख़त्म होना था, फ़ौरन ज़मीन पर गिरा और गिरते ही जां बहक़ तस्लीम हो गया यानी इंतिकाल कर गया।

अय्यामे ग़दर यानी 1957 की जंगे आज़ादी में जिस दिन बहादुर शाह ज़फ़र दिल्ली में गिरफ़्तार हुआ आप रहमतुल्लाह अलैह ने उसी दिन बल्कि उसी वक़्त अपनी रुहानी तार बर्क़ी लोगों को सुना दी थी, इस किस्म की सैकड़ों हज़ारों करामतें आप रहमतुल्लाह अलैह की मशहूर हैं।

ग़ैर मुस्लिम और मुसलमान सब आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक्रिद और जान निसार थे। 15 ज़िलकादा 1277 हिजरी, इतवार के दिन एक सौ पाँच बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख़्तियार फ़रमाया यानी विसाल फरमा गये।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक क़ब्रिस्तान पंच कुईयां (मुत्तसिल नाई मंडी) के शुमाली हिस्से में पक्की सड़क के करीब वाक़ेअ है जिस के लौहे मज़ार पर अरबी, फ़ारसी, उर्दू की तारीखें लिखी हुई है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज209.210)

(7) मुफ़्ती हाफ़िज़ मुहम्मद रमज़ान

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली वतन क़स्बा लेदरी ख़तीब ज़िला फ़तेहपुर हंसवा था, वालिदे माजिद का नाम मौलवी बीर अली बेग था, मौलाना अब्दुल हैय्य लखनवी के शागिर्द और मौलाना सलामतुल्लाह साहिब रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे।

रस्मी उलूम के आलिम, ख़ुश इल्हान हाफ़िज़ और क़ारी थे, जामा मस्जिद आगरा के मुफ़्ती और एक बुज़ुर्ग हस्ती थे, हर अदना और आला से अख़्लाक़ के साथ पेश आते और हत्तल मक़दूर किसी की दिल शिकनी गवारा ना करते थे।

66 बरस की उम्र में 6 रबीउल अव्वल 1334 हिजरी को ब वक़्त 7:30 बजे शाम इंतिक़ाल फ़रमाया और दूसरे दिन दोपहर के करीब क़ब्रिस्तान पंच कुईयां में दफ़न किए गए, नमाज़े जनाज़ा में शहर के तमाम

मोअज्जिजीन और बहुत कसरत से आदमी शरीक थे जिससे इल्मी शानो शौकत का खास जलवा नज़र आता था ।(बोस्ताने अख्यार, पेज255)

(8) उस्माने गनी मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह एक साहिबे कमाल मज्ज़ूब थे । दिल के गनी और उस्माने गनी के नाम से मौसूम थे और लाट साहिब की घोड़ी के लक़ब से मशहूर थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के उलटे पांव में लंग था अजीबो गरीब और मुख्तलिफ़ हालतें आप रहमतुल्लाह अलैह पर तारी हुआ करती थीं, कभी कभी जज़्बे का ऐसा सैलाब आता था कि होशो हवास को बहा कर आप रहमतुल्लाह अलैह को नंगा कर देता था, कभी नमाज़ का ख़्याल आ गया तो तमाम तमाम रात एक पांव से नीयत बाँधे खड़े रह कर गुज़ार दी । जिधर ध्यान आ गया उधर मुँह कर के खड़े हो गए और मज्ज़ूबी की हालत के साथ नमाज़ पढ़ने लगे ।

अगरचे बोस्ताने अख्यार के तख़्तहाए चमन तंग हैं मगर आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़िरक़े आदात और करामात के किसी क़द्र हालात से उन को पुर बहार करता हूँ ।

येह हालात मिन जुमला उन सैकड़ों वाकिआत के हैं जो फ़ाज़िले अजल और आलिमे बा अमल जनाब मौलवी मुहम्मद सआदतुल्लाह साहिब संभली ने राक़िम बोस्तान से अपने चश्मदीद बयान फ़रमाए । उस्माने गनी मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह को मौलवी सआदतुल्लाह साहिब से निहायत उन्स था, उस्माने गनी मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह दो तीन बरस तक आप के मकान पर मुक़ीम रहे थे । एक मर्तबा सर्दी के दिनों में जबकि मौलवी साहब मकान के अंदर कमरे में दरवाज़ा बंद किए हुए इस्तिराहत यानी आराम करने में मसरूफ़ थे । रात के दो बजे उस्माने गनी मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह ने दरवाज़े पर आकर आवाज़ दी । दरवाज़ा बंद था अंदर तक

आवाज़ पहुंची यकायक मौलवी साहब को मालूम हुआ कि कमरा के अंदर मज्ज़ूब साहिब हू ब हू के नारे मार रहे हैं, फ़ौरन आँख खुल गई। कमरे को ख़ाली पाया मगर दस्तक की आवाज़ सुनी, उठ कर दरवाज़ा खोला, जब आप रहमतुल्लाह अलैह अंदर आए तो पूछा कि हज़रत येह क्या भेद था ? जवाब दिया कि तुझे आवाज़ देते देते थक गए जब इस तरह ना उठा तो हमने दूसरी तरह उठा दिया।

एक दफ़ा मौलवी साहब रात के वक़्त आराम फरमा रहे थे कि पलंग के पास आकर आप को जगाया। मौलवी साहब ने आँख खोल कर देखा कि एक काला साँप हाथ में है जिसे मज्ज़ूब साहिब रहमतुल्लाह अलैह दर्मियान से पकड़े हुए हैं, बोले कि मैं बावर्ची ख़ाना में जाकर लेटा। वहां एक सुराख है उस में पांव का अँगूठा लगा लिया था, येह हज़रत (यानी साँप) अंगूठे से खुश फ़ेलियाँ करने लगे। जब किसी तरह सोने ना दिया तो मैं भी उठकर बैठ गया और उन्हें, हाथ में लेकर खेलने लगा।

एक मर्तबा ज़िंदा साँप कहीं से पकड़ लाए और गाजर मूली की तरह टुकड़े टुकड़े कर के सर के साथ खा गए।

एक दिन हाथों में कांच की चूड़ियां पहने हुए थे। यकायक पत्थर से तमाम चूड़ियां तोड़ डालीं और सिल पर ख़ूब बारीक पीस कर कटोरे में पानी डाल कर शर्बत की तरह पी गए, जो दरदरा हिस्सा बाक़ी रहा उसे आँखों में सुर्मा की तरह लगा लिया मगर किसी किस्म का असर ना महसूस हुआ।

एक दफ़ा भंग लाकर उसे प्याले में भिगो दिया, तीन दिन तक वो भीगी रही, चौथे दिन किसी तक़रीब यानी दावत से मौलवी साहब के घर एक बकरा ज़िबह हुआ जिस क़द्र उस का ख़ून निकला वो लेकर उसी प्याले में डाल दिया और बाज़ार से दही लाकर मिलाया और सब नोश

यानी पी गए। इत्तिफाक़ से एक डाक्टर साहिब उस वक़्त मौजूद थे बोले कि येह शख्स ज़्यादा से ज़्यादा दो तीन घंटे में मर जाये गा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह पर किसी किस्म का असर पैदा ना हुआ। सेंदावर अक्सर फ़ाका करते थे मगर कुछ नुक़सान ना करना था।

मौलवी साहब का बयान है कि आप रहमतुल्लाह अलैह में करामाती शान मौजूद थी मुश्किल से मुश्किल मसाइल महेज़ ख़याल आने पर आप रहमतुल्लाह अलैह के शिगुफ़्ता दीदार को देखकर हल हो जाते थे, अगरचे तसव्वुफ़ के हक़ाइक़ व असरार के बयान में वो गुरेज़ करते थे यानी बयान करने से बचते थे मगर दो एक मर्तबा निहायत मेहरबानी के आलम में जब इसरार किया गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने निहायत दिलचस्प व दिलक़श पैराये में हक़ाइक़ व मारिफ़त के दरिया बहा दिए। हालाँकि उन की सूरतो शक़ल से इस किस्म की क़ाबिलियत का किसी तरह गुमान व ख़याल भी ना हो सकता था।

वफ़ात से चंद दिन पहले मकान पर तशरीफ़ लाए और बोले कि तुझ से मिलने को बहुत दिल होता था, मिलने को आए हैं, अब हम अपने असली मकान को जाते हैं, वो मकान सूना पड़ा है, उस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह मर्ज़ इस्तिस्का में मुब्तला थे, थोड़ी देर क्रियाम फ़रमा कर वापस गए। दो तीन दिन बाद मौलवी साहब मंटोला में जहां आप रहमतुल्लाह अलैह मर्ज़ की हालत में मुक़ीम थे इयादत के वास्ते तशरीफ़ ले गए और मिज़ाज पुर्सी की तो फ़रमाया कि अभी कुछ देर है, इल्तिजा की कि मकान पर तशरीफ़ ले चलिए, जवाब दिया कि जी तो यही चाहता है, क्या अच्छा होता कि इस हालत में मैं तेरे मकान पर होता।

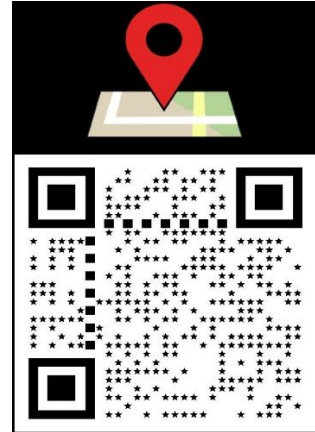
एक लड़की, पैर दबाती, दूसरी कलाम मजीद सुनाती। मगर इस हालत में कैसे जा सकता हूँ, गर्ज़ कि दो तीन दिन बाद शव्वाल 1329

हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह सराए फ़ानी से वतने जावेदानी को रेहलत फरमा गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया ।

ख्वाबगाह यानी मज़ार मुबारक कब्रिस्तान पंच कुईयां मुत्तसिल नाई मंडी में है ।

मौलवी साहब के इलावा बशीरुद्दीन साहिब घड़ी साज़ कनारी बाज़ार ने भी आप रहमतुल्लाह अलैह की बहुत सी चश्मदीद यानी आँखों देखी करामात बयान किया है । रोज़ाना शाम के वक़्त दो तीन घंटा वो बशीरुद्दीन साहिब की दूकान पर बैठा करते थे और उन पर बहुत मेहरबान थे । (बोस्ताने अख्यार, पेज119.122)

कब्रिस्तान पंचकुइयां के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस **QR Code** को **Scan** कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



आगरा वालों के लिए 12 किताबों का तोहफा

आगरा वाले आशिकाने औलिया के लिए खुशखबरी !
आगरा के औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल 12
किताबों को हासिल कर के पढ़ें और दूसरों को तकसीम
कर के फैजाने औलिया को आम करें ।

- (1) आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत
- (2) सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत
- (3) आगरा के गौस शाह मुबारक गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत
- (4) लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (5) हींग की मंडी व नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत
- (6) बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत
- (7) जमना पार (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (8) मिर्जा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत
- (9) कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (10) कब्रिस्तान पीर गिलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत
- (11) ताजगंज (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (12) शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत
- (13) सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलियाए किराम की सीरत
- (14) नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (15) सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत
- (16) शैख सलीम चिश्ती की सीरत व फतेहपुर सीकरी की हिस्ट्री

मुसन्नफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल करें :8808693818

सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
खानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वदी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकू का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक्रात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया
भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुजुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया
आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया
निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया
हक़ लिखा, बेबाक़ लिखा, ख़ौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक़ फ़ितने को यूँ धमका दिया
इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया
कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया
जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़.....	3
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा.....	6
आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़.....	7
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत.....	15
कब्रिस्तान पंचकुइयां (आगरा) के 8 औलियाए किराम की सीरत.....	18
कब्रिस्तान पंचकुइयां.....	18
(1) मौलाना मुहम्मद सिराजुल इस्लाम.....	18
(2) शैख़ अबुल फ़त्ताह.....	20
(3) शैख़ अबुल फ़तह शहीद.....	20
(4) हाफ़िज़ अहमद हुसैन नक्शबंदी मुजहिदी.....	21
(5) शैख़ मुहम्मद आरिफ़.....	23
(6) मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब.....	24
(7) मुफ़्ती हाफ़िज़ मुहम्मद रमज़ान.....	25
(8) उस्माने गनी मज्ज़ूब.....	26